जैव विकास की बहस से नया मोड़

अमरीका में पिछले कई वर्षों से चर्च इस बात को लेकर अड़ा हुआ है कि डार्विन का जैव विकास का सिद्धान्त ईसाई आस्थाओं के खिलाफ जाता है। धीरे-धीरे इस लड़ाई का रूप बदला है। अब चर्च से जुड़े लोग कहने लगे हैं कि शायद डार्विन की यह बात तो सही है कि सजीवों का क्रमिक विकास हुआ है मगर डार्विन इस मामले में गलत हैं कि यह विकास बेतरतीब (यानी अनिर्दिष्ट) ढंग से हुआ है। चर्च अधिकारियों का मत है कि इस विकास प्रक्रिया का संचालन करने वाली एक शक्ति है जो सोच समझकर इसे एक दिशा देती है - यह समझना आसान है कि चर्च के मुताबिक वह शक्ति ईश्वर है। इसे वे इंटेलिजेन्ट डिज़ाइन (सोची-समझी रचना) का सिद्धान्त कहते हैं और मांग करते हैं कि अमरीकी स्कूलों में इसे डार्विन के सिद्धान्त के बराबर समय दिया जाना चाहिए।

पेनसिल्वेनिया प्रांत के प्रशासन ने इस मांग को स्वीकार भी कर लिया था। मगर वहां पालकों के एक समूह ने अदालत से गुहार की थी कि स्कूलों में इन्टेलिजेन्ट डिज़ाइन पढ़ाए जाने पर रोक लगाई जाए। अदालत ने पालकों की अपील को मंजूर किया।

मगर अब चर्च प्रतिष्ठान में भी इस मामले में मतभेद उभरते दिख रहे हैं। करीब 10 हज़ार पादरियों ने एक हस्ताक्षर अभियान चलाया है जिसमें कहा गया है कि बुनियादपरस्त ईसाई सारे ईसाइयों के नुमाइन्दे नहीं हैं। इस अभियान की शुरुआत सन 2004 में विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय के माइकल ज़िमरमैन ने की थी। अभी फरवरी में 'विकास रविवार' मनाया गया जिसमें विज्ञान और धर्म के आपसी सामंजस्य पर विचार किया गया। ऐसा लगता है कि यह रविवार अब सालाना जश्न का रूप ले लेगा। यह पहली बार है कि बड़ी संख्या में ईसाई पुरोहित कह रहे हैं कि जैव विकास के सिद्धान्त को कुफ्र बताने वाले पादरी सबके प्रतिनिधि नहीं हैं। इन पादरियों ने जो हस्ताक्षर अभियान छेड़ा है उससे साफ हो जाता है कि जैव विकास सम्बंधी बहस धर्म बनाम विज्ञान का मामला नहीं है। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***